अनुक्रमणिका

१. **शिक्षा** १७—२२
शिक्षा जीवन के विकास का पर्याय, शिक्षा आध्यात्मिक प्रक्रिया, शिक्षा संस्कृति की प्रणाली।

२. **शिक्षा और दर्शन** २३—३५
प्राचीन भारत का शिक्षा-दर्शन, पाश्चात्य शिक्षा-दर्शन, भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा-दर्शन में मौलिक भेद।

३. **भारतीय शिक्षा के दार्शनिक आधार** ३६—४५
एकात्म तत्त्व, कर्मवाद एवं पुनर्जन्म का सिद्धान्त, सृष्टि में सोद्देश्यता एवं परस्पर पूरक व्यवस्था, जीवन का लक्ष्य, धर्म, ईश्वरोपासना के सभी मार्ग सत्य, धर्मानुसार अर्थ और काम, वसुधैव कुटुम्बकम्।

४. **मनोविज्ञान और शिक्षा** ४६—५१
पाश्चात्य मनोविज्ञान, भारतीय मनोविज्ञान।

५. **शिक्षा के भारतीय मनोवैज्ञानिक आधार** ५२—८०
मनुष्य की मूल प्रकृति आध्यात्मिक; समस्त ज्ञान मनुष्य के अन्तर में; अन्तःकरण चतुष्टय—मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त; ज्ञान-प्राप्ति के मार्ग—प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुमान ज्ञान, शब्द ज्ञान, अन्तर्ज्ञान; एकाग्रता; ब्रह्मचर्य; संस्कार-सिद्धान्त; व्यक्तित्व—पंचकोश, सात्विक, राजसिक, तामसिक व्यक्तित्व, दैवी और आसुरी सम्पदा, चतुर्विध व्यक्तित्व; योग-विज्ञान—अष्टांग योग, नाड़ी-मण्डल, चक्र एवं कुण्डलिनी शक्ति. मातृका शक्ति, योग एवं शिक्षा।

६. **शिक्षा के उद्देश्य** ८१—११६
पंचमुखी शिक्षा—शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा।

७. **पाठ्यक्रम-निर्धारण के सिद्धान्त** ११७—१३७
पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का माध्यम, पाठ्यक्रम में योग आधार विषय, पाठ्यक्रम छात्रों की पात्रता एवं रुचि के अनुरूप, पाठ्यक्रम समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं का पूरक, उत्पादक कार्यानुभव, शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, त्रिभाषा सूत्र, अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाएँ, मानविकी, विज्ञान और गणित, पाठ्यक्रम ज्ञान-प्रक्रिया का साधन, पाठ्यक्रम में गतिशीलता एवं लचक, विषयों में सह-सम्बद्धता, प्रतिभावान छात्रों की शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षा के साथ अर्थोपार्जन, स्त्री-शिक्षा, शिशु-वाटिका, ग्रामीण शिक्षा, वनवासी शिक्षा।

८. **शिक्षण के सिद्धान्त एवं पद्धतियाँ** १३८—१६४
शिक्षण संस्कार-प्रक्रिया; ज्ञान अर्जित किया जाता है, दिया नहीं जाता; बालक की प्रकृति के अनुरूप स्वतन्त्रतापूर्वक विकास; ज्ञानेन्द्रियों द्वारा शिक्षण; सच्चे शिक्षण के लिये मन का प्रशिक्षण एवं चित्त की शुद्धि आवश्यक; लक्ष्य ज्ञानार्जन का मूल; जिज्ञासा ज्ञानार्जन का आधार; शिक्षण के सूत्र; शिक्षण-पद्धतियाँ— प्राचीन भारत में प्रयुक्त कुछ आदर्श पद्धतियाँ, पश्चिमी देशों में प्रचलित प्रमुख शिक्षण-पद्धतियाँ—हरबार्टीय पंचपदी, योजना-प्रणाली, इकाई पद्धति, किण्डरगार्टन पद्धति, मोंटेसरी पद्धति, डाल्टन पद्धति, अर्वाचीन भारत में प्रायोगिक शिक्षण-पद्धतियाँ—बुनियादी शिक्षा, शान्ति-निकेतन की शिक्षा, गुरुकुल की शिक्षा, श्री अरविन्द अन्तरराष्ट्रीय शिक्षा-केन्द्र, सरस्वती शिशु-मन्दिर, सरस्वती विद्या-मन्दिरों की अभिनव पंचपदी शिक्षण-पद्धति; शिक्षण-प्रविधि (शिक्षण तकनीक)।

९. **विद्यालय में संस्कारक्षम वातावरण** १६५—१६९
विद्यालय सरस्वती के पवित्र मन्दिर, विद्यालय प्रकृति की गोद में; भवन सरलता, सुन्दरता एवं पवित्रता से युक्त; प्रेम, आत्मीयता और सद्भावना का वातावरण; संगीत एवं कला; प्रार्थनासभा, छात्रों की अनुशासनयुक्त क्रियाशीलता, छात्रों और शिक्षकों का वेश, भारतीयत्व का वायुमण्डल।

१०. **विद्यालय सामाजिक चेतना के केन्द्र** १७०—१७८
सामाजिक चेतना का अर्थ, समाजीकरण-प्रक्रिया का मूलाधार परिवार, विद्यालय समाज-निर्माण के पवित्र स्थल, अन्तर्निहित शक्तियों का विकास समाज के हित के लिये, विभिन्न विषयों का ज्ञान समाज

की समस्याओं के समाधान-हेतु, शिक्षा का सम्बन्ध जीवन से जोड़ना, सामाजिक समस्याओं की अनुभूति, सामाजिक एकात्मता एवं सह-जीवन की अनुभूति, सांस्कृतिक पर्वों के आयोजन, स्वदेशी-निष्ठा का जागरण, विद्यालय सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र, अभिभावक-अध्यापक सम्पर्क, शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का सशक्त माध्यम।

११. **परिवार और शिक्षा** १७९—१८८

परिवार संस्था का महत्त्व, परिवार संस्थान का सांस्कृतिक रूप, परिवार में बड़ों का व्यवहार, बच्चों को भरपूर स्नेह, घरों में संस्कार-क्षम सज्जा, भोजन-पद्धति पवित्रतापूर्ण एवं संस्कारप्रद, ईश्वर में आस्था एवं आध्यात्मिकता का वातावरण, संस्कारप्रद पत्र-पत्रिकाएँ, सांस्कृतिक पर्वों का शुद्ध रूप में आयोजन, भारतीय वेश-भूषा एवं मातृ-भाषा के प्रति स्वाभिमान, विद्यालय एवं परिवार, आचार्य-अभिभावक सम्पर्क, अभिभावक-सम्मेलन, सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा।

१२. **परीक्षा एवं मूल्यांकन** १८९—१९३

परीक्षा-प्रक्रिया, मूल्यांकन का क्षेत्र, स्वमूल्यांकन, मूल्यांकन सर्वांगीण एवं सतत प्रक्रिया, मूल्याकन की पद्धति, मूल्यांकन-पद्धति की विशेषताएँ, निष्कर्ष।

१३. **शिक्षक या आचार्य** १९४—२००

शिक्षण-प्रक्रिया में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान, स्वयं के आचरण के द्वारा शिक्षा; आचार्य—विद्यार्थियों का हितचिन्तक, पथ-प्रदर्शक एवं मित्र; आचार्य-विद्यार्थी एक आध्यात्मिक सम्बन्ध, आचार्य की विद्वत्ता, शिक्षण-कला में निपुणता, आचार्य का प्रभावशाली व्यक्तित्व, आचार्य राष्ट्र-निर्माता एवं समाज का पथ-प्रदर्शक, वर्तमान में आचार्यों का सम्मान एवं आर्थिक स्तर।

१४. **शिक्षा में स्वायत्तता** २०१—२०५

प्राचीन भारत में शिक्षा की व्यवस्था, वर्तमान में शिक्षा की स्थिति, सरकारी नियन्त्रण से मुक्त शिक्षा की व्यवस्था हो, न्यायपालिका के समान शिक्षा की स्वतन्त्र व्यवस्था हो, आचार्यों एवं शिक्षाविदों द्वारा नियमन, प्रबन्ध-समितियों में शैक्षिक क्षेत्र के व्यक्तियों का बहुमत हो, उपसंहार।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची २०६—२०७